विदेश में हिंदी

लेख, शोध-आलेख, तथ्य, आकलन, स्वानुभव

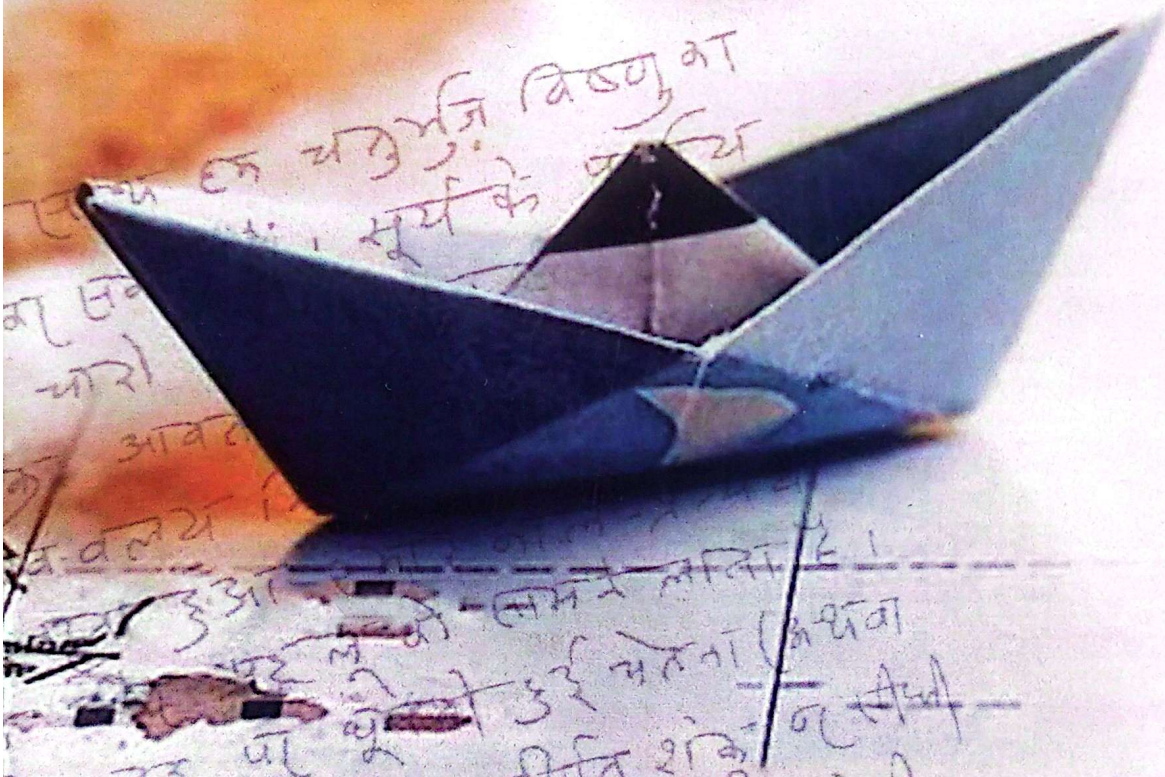

संपादक

कुबेर कुमावत

Сканировано с CamScanner

विदेश में हिंदी

(लेख, शोध-आलेख, तथ्य, आकलन, स्वानुभव)

संपादक

कुबेर कुमावत

सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

www.sarvbhasha.in

Сканировано с CamScanner

सर्व भाषा ट्रस्ट

J-49, Street No. -38, Rajapuri, Main Road
Uttam Nagar, New Delhi -110059
E-mail : sbtpublication@gmail.com
Website : www.sarvbhasha.in
☎ 011 35853664

विदेश में हिंदी

संपादक : कुबेर कुमावत
ISBN : 978-93-48013-78-1
प्रथम संस्करण : 2025

© कुबेर कुमावत

मूल्य : ₹ 499. 00

मुद्रक: आर. के. ऑफसेट प्रोसेस, दिल्ली

VIDESH MEIN HINDI

By Kuber Kumawat

[सर्वाधिकार सुरक्षित : इस पुस्तक के किसी भी अंश अथवा सामग्री को संपादक एवं लेखक की अनुमति के बिना पुनर्प्रकाशित या प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक के संपादक एवं लेखक की बिना किसी तरह की लिखित अनुमति के इसकी नक़ल, फोटोकॉपी करना या अन्य सूचना माध्यमों से प्रकाशित या प्रसारित करना कानूनन अपराध है।]

Сканировано с CamScanner

परिशिष्ट

सहयोगी रचनाकार

1.	डॉ. विमलेश कांति वर्मा	:	73- वैशाली, पीतमपुरा, दिल्ली-110034 ई–मेल : Vimleshkanti@gmail. com वेबसाईट : www. vimleshkanti. org
2.	डॉ. तोमिओ मिज़ोकामि	:	पूर्व प्राध्यापक, विदेशी भाषा विभाग, ओसाका विश्वविद्यालय, जापान
3.	प्रो. वेद प्रकाश 'वटुक'	:	351 कैलाश पुरी, मेरठ (उ.प्र.) - 250002
4.	डॉ. सिरोजिद्दीन नुर्मातोव	:	असोसियट प्रोफ़ेसर, ताशकंद राज्य प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय, ताशकंद, उजबेकिस्तान, गणराज्य
5.	प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी	:	निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
6.	डॉ. वेदप्रकाश सिंह	:	सहायक अतिथि प्राध्यापक, ओसाका विश्वविद्यालय, जापान
7.	सुनंदा वर्मा	:	42 च्वी चीएन रोड, सिंगापुर 119793 वेबसाईट : www.sunanda.net ईमेल : sunandaverma@yahoo.com
8.	डॉ. संजीता वर्मा	:	त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू, नेपाल
9.	शशि डूकन	:	मॉरीशस, दूरभाष : 4266936 मोबाइल-57269528 ईमेल : s.dookun@mbcradio.tv shashidooun@gmail.com
10.	इला प्रसाद	:	पी.ओ.बॉक्स 680902, ह्यूस्टन, टेक्सास 77268, यू.एस.ए.
11.	सुधीर ओखदे	:	'अव्यान' सर्वे नंबर 561/2D/ 1/2 , प्लॉट नंबर 5,अनुराग स्टेट बैंक कॉलनी, पवन हिल्स, जलगाँव 425002
12.	डॉ. कुसुम नैपसिक	:	110 वुडब्रायर रोड, विन्स्टन सेलम, नॉर्थ कैरोलाइना 27106 मोबाइल : 512-924-1332 ईमेल : kusumknapczyk@gmail. com

Сканировано с CamScanner

उज़बेकिस्तान में हिंदी की वर्तमान स्थिति एवं संभावनाएँ

• डॉ. सिरोजिद्दीन नुर्मातोव

भाषाविदों को सुस्पष्ट है कि भाषा शिक्षण किसी भाषा के बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने की शिक्षा देने की पद्धति पर आधारित है। इसका अनुसरण करते हुए हमारे विश्वविद्यालय में गत वर्षों के दौरान तीन मुख्य परम्पराओं का शुभारंभ और रचनात्मक विकास हुआ था जो क्रमशः तीन शिक्षात्मक आयामों या दिशाओं में परिवर्तित हो गयी था अर्थात हिंदी भाषा और साहित्य के अध्यापकों, अनुवादकों एवं शोधकर्ता विद्वानों की तैयारी का काम। आजकल तक इस प्रक्रिया के अंतर्गत जिसका श्रीगणेश भारत को स्वतंत्रता प्राप्त होने के उपलक्ष्य में किया गया था कुल मिलाकर दो हज़ार से अधिक विशेषज्ञों की तैयारी की गयी है जो वर्तमान काल में न केवल हमारे देश, बल्कि विदेशों में भी सफलतापूर्वक कार्यरत हैं। इनकी संख्या में रूस, युक्रेन, कज़ाकिस्तान, किरगिज़स्तान, ताजिकिस्तान, जॉर्जिया, आज़ेरबयजान, क्यूबा, वियतनाम, पोलैंड, जर्मनी, बोल्गेरिया, मंगोलिया, लिटोनिया जैसे छोटे और बड़े देश भी हैं। वर्तमान काल में वे विज्ञान अकादमी के प्राच्यविद्या संस्थानों में, विभिन्न प्रकाशन-गृहों में, ब्रॉडकास्टिंग कंपनियों में, विदेश मंत्रालय जैसे अनेक सरकारी कार्यालयों में विशेष तौर पर पाठशालाओं और लाइस्मों में सक्रिय रूप से कार्यरत हैं।

गत अवधि के दौरान हमारे यहाँ नवीन भारतीय भाषाओं तथा साहित्य पर विशेषज्ञों की तैयारी के उद्देश्य से बहुत-सी पाठ्यपुस्तकें, शब्दकोश और दूसरी पाठ्यसामग्रियाँ संकलित की गई थीं जिनका उपयोग माध्यमिक तथा उच्चशिक्षा के संस्थानों में हो रहा है और विभाग के सारे सदस्यगण हमारे पूर्वजों और स्वर्गवास

Сканировано с CamScanner

गुरुजनों के सृजनात्मक धरोहर को सीखने और दैनिक कार्यों में लाने को अपना सर्जनात्मक कर्तव्य समझते हैं। हम इसी सिलसिले में पाठकों को हमारे प्रयत्नों के कुछ परिणामों से परिचित कराना चाहते हैं। स्वाधीन उज़बेकिस्तान के माध्यमिक और उच्चशिक्षा के क्षेत्रों में हो रहे सुधारों के कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए जिनका लक्ष्य निरंतर शिक्षा का कार्यान्वयन माना जाता है, हिंदी की अध्यापन प्रणाली को हम तीन चरणों में विभाजित कर सकते हैं। इन में सब से पहले चरण में आम शिक्षा प्रदान करनेवाली पाठशालाएँ हैं जहाँ दूसरी कक्षा से नौवीं कक्षा तक पढ़ाई होती है। दूसरे चरण में तो जिसमें दसवीं कक्षा से ग्यारहवीं कक्षा तक शिक्षा दी जाती है अकादमिक लाय्सम का नाम ले लिया है और तीसरा चरण हमारे विभाग में दी जानेवाली बी.ए. और एम.ए. की शिक्षा के रूप में प्रस्तुत है। उज़बेकिस्तान में हिंदी शोधकार्य की परंपराएँ आदिकालीन पूर्व की अद्वितीय सभ्यता और खास तौर से भारत की प्राचीन आध्यात्मिक तथा भौतिक संस्कृति की ओर उज़बेक लोगों के मन व मस्तिष्क में खिलनेवाली सदियों पुरानी अभिरुचि और प्राकृतिक आकर्षण से संबंधित है जो कुल मिलाकर इस देश में ओरिएंटल स्टडीज में परिवर्तित हो गये थे।

हमारी समझ में सबसे पहले मुख्य सिद्धांत के रूप में उज़बेक और हिंदी भाषाओं की सांस्कृतिक भाषागत तथा टॉपोलॉजिकल समानता का सिद्धांत परमोचित माना जा सकता है जो हमारे सदियों पुराने प्राचीन और दीर्घकालीन ऐतिहासिक आपसी संबंधों का परिणाम है। इसीलिए हमारी जनताओं के इतिहास में जर्दुश्ती, सूफ़ी-मत, भक्ति, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम की स्पष्ट रेखाएं सर्वविदित है जिनके सौजन्य से दोनों जनताओं के लिये अल-बेरूनिय, इब्न सिना, अमीर खुसरो, अलिशेर नवाई, ज़हीरद्दीन मुहम्मद बबुर, अब्दुलकादिर बेदिल, ज़ेबुनिसा, बयरम ख़ां, मिर्ज़ा ग़ालिब और आजकल रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी, जुल्फ़ीय, अम्रीता प्रितम जैसे व्यक्तित्व, कवि, लेखक, राजनीतिज्ञ और सांस्कृतिक तथा कला की हस्तियाँ भी जीती-जागती मिसाल हो सकते हैं। जहाँ तक भाषागत दृष्टिकोण का सवाल हो उज़बेक और हिंदी भाषाओं में कई हज़ार की संख्या में पायी जानेवाली आम शब्दावली के अतिरिक्त जो सांस्कृतिक शब्दसंपदा का एक महत्वपूर्ण भाग सिद्ध है, ध्वनिविचार, व्याकरण और वाक्य-विन्यास के क्षेत्रों में भी बहुत-सी समान विशेषताएँ दृष्टिगोचर हैं। इसी कारण दोनों भाषाओं के तुलनात्मक व्याकरण के संकलन के हेतु बहुत ठोस आधार बनाया जा सकता है

Сканировано с CamScanner

और इसी के भीतर एक ऐसे आधारभूत तत्त्वों का आविष्कार किया जा सकता है जो पाठन प्रक्रिया के लिये परम लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। उदाहरण के लिए ध्वनिसमूह में ज़ (za), क़ (qa), ग़ (g'a), ख़ (ha), फ़ (fa) जैसे व्यंजन हैं जो केवल भाषाओं में अरबी और फ़ारसी प्रभावों के फलस्वरूप प्रविष्ट हुए थे। व्याकरण में भी ऐसी बहुत-सी संयुक्त क्रियाएँ मिल जाती हैं जो दोनों भाषाओं में लगातार उपलब्ध हैं। फिर संज्ञा शब्दों के विकृत रूप जो विशेष प्रत्ययों के माध्यम से उज़बेक भाषा में बनते हैं हिंदी में विभक्तियों या परसर्गों के प्रयोग के अनुकूल हैं। और फिर बिलकुल इसी प्रकार दोनों भाषाओं के वाक्य-विन्यास में शब्दों का प्रमाणित क्रम निर्धारित एक ही पद्धति से स्थापित किया जाता है। इसी क्षेत्र में संयुक्त वाक्यों के निर्माण में भी "लेकिन", "बल्कि", "कि", "ताकि", "अगर", "अगरची", "या" जैसे संयोजकों की दोनों भाषाओं में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है। यह भी उल्लेखनीय है कि उज़बेक भारतविदों के लिए गर्व और सौभाग्य की बात है कि सन् 2014 में भारत के राष्ट्रपति श्री. प्रणव मुखर्जी की ओर से स्वर्गीय प्रोफ़ेसर अज़ाद शमातोव जॉर्ज ग्रीर्सन नामक अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किये गये हैं। प्रोफ़ेसर अज़ाद शमातोव ने उज़बेकिस्तान में भारतविद्या के विकास के लिए विशेषकर हिन्दी भाषा को प्रचार-प्रसार करने में काफ़ी परिश्रम किये हैं। उनकी तरफ़ से भाषा विज्ञान, भारतीय साहित्य, विशेषकर भारतीय आर्यभाषाओं से संबंधित दो सौ से अधिक वैज्ञानिक-ग्रंथ, निबंध, पाठ्यपुस्तकें, शब्दकोश बड़ी संख्या में प्रकाशित किये गये हैं। उनकी पहलक़दमी के अनुसार महात्मा गाँधी भारतविद्या केंद्र की नींव भी रखी गयी थी और इसी केंद्र में प्रोफ़ेसर अज़ाद शमातोव की ओर से हिंदी भाषा और भारतीय साहित्य से संबंधित विभिन्न विषयों पर कई संगोष्ठियों का आयोजन किया गया है। प्रतिवर्ष महान नेता महात्मा गाँधी जी के जन्मदिन के सुअवसर पर सम्मेलनों का आयोजन भी किया जाता है। इन सम्मेलनों में भारतविद् विद्वानों, हिंदीप्रेमियों की ओर से गाँधी जी की जीवनी से संबंधित आलेखों की प्रस्तुति की जाती है।

उज़बेकिस्तान के प्रति हिंदीप्रेमियों के लिए सौभाग्य का दिन तब भी रहा था जब 7 जुलाई, 2015 को भारत के प्रधानमंत्री महामहिम श्री नरेंद्र मोदी जी की उज़बेकिस्तान यात्रा के दौरान उनके हाथों प्रथम उज़बेक-हिंदी शब्दकोश का लोकार्पण हुआ था जिस शब्दकोश को वरिष्ठ भारतविद् विद्वान प्रोफ़ेसर अज़ाद शमातोव और वरिष्ठ हिंदी प्राध्यापक बयात रखमतोव ने बनाया था। इस अवसर पर

Сканировано с CamScanner

उज़बेकिस्तान के माननीय प्रधानमंत्री श्री शवकात मिर्ज़ियाएव जी (वर्तमान काल में उज़बेकिस्तान गणराज्य के राष्ट्रपति) तथा प्रोफ़ेसर अज़ाद शमातोव और भारतविद् बयात रखमतोव भी उपस्थित थे। उज़बेकिस्तान में स्थित ताशकंद राजकीय प्राच्यविद्या विश्वविद्यालय के दक्षिणी एवं दक्षिण-पूर्वी एशिया की भाषाओं के विभाग के अध्यापकगण विविध दिशाओं में अपने शोधकार्य करते आ रहे हैं। उल्लेखनीय है कि उन के बीच विशेषकर भाषाविज्ञान तथा भारतीय साहित्य से संबंधित दिशाओं में काफ़ी शोधकार्य किये जा चुके हैं तथा कई अन्वेषण ग्रंथों का प्रकाशन भी हो चुका है। वरिष्ठ भारतविद् प्रोफ़ेसर अज़ाद शमातोव की ओर से "हिंदी भाषा का प्रमाणिक व्याकरण", "दक्षिणी एशिया की भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन", "हिंदी-उज़बेक शब्दकोश", " उज़बेक-हिंदी शब्दकोश", हिंदी भाषा का सैद्धांतिक व्याकरण" आदि पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। डॉ. तमारा होदजायेवा की तरफ़ से आधुनिक भारतीय साहित्य से संबंधित तथा प्रोफ़ेसर उल्फ़ात मुख़िबोवा की तरफ़ से प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय साहित्य से विशेषकर भक्ति साहित्य से संबंधित कई वैज्ञानिक रचनाएँ छापी गयी हैं।

यह बात अति उचित लग रही है कि वर्तमान उज़बेक और हिंदी भाषाओं के सामाजिक और व्यावहारिक विशेषताओं में भी समानता उत्पन्न हो रही है। उदाहरणार्थ दोनों भाषाएँ स्वाधीन हुए देशों की राष्ट्रभाषाएँ बन चुकी हैं जिनमें उन्हीं देशों की बहुजातीयता, बहुसांस्कृतिकता और बहुपंथीयता निहित हैं। अतः दोनों में एक ही साथ विशेष महत्व रखनेवाली भाषा निर्माण की प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं जो भाषागत परिस्थिति और भाषागत राजनीति पर निर्भर हैं। मिसाल के तौर पर नयी तकनीकी प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक परिभाषाओं के निर्माण और प्रमाणीकरण तथा नये शब्दों और परिभाषाओं को बनाने के स्त्रोतों की खोज, बोलचाल और साहित्य शैलियों के विभेदों से निपटने के उपायों का निर्धारण और स्पष्टीकरण जैसी समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं। इन समस्याओं को सुलझाने की विधियाँ हमारे बीच में विचार और अनुभव का आदान-प्रदान और आपसी समृद्धिकरण की परंपराओं को विकसित करने के प्रयत्नों से ही दोनों जनताओं को आपस में लाने और सांस्कृतिक समन्वय की दिशा में आगे बढ़ाने के हेतु नये-नये फलदायक आयाम खुल सकते हैं। उज़बेक भाषी विद्यार्थियों को पढ़ाते समय समानताप्रधान विशेषताओं के अतिरिक्त दोनों भाषाओं के भिन्न-भिन्न तत्वों का आकलन करना

Сканировано с CamScanner

के [illegible] [illegible] [illegible] सकता है, यहाँ [illegible] [illegible] हिंदी भाषा की [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] की दृष्टि से [illegible] जरूरी है जिनके [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] और [illegible] की मुख्य पद्धतियों का ज्ञान और [illegible] के [illegible] की आवश्यकता है जो [illegible] शब्दों और रूपों के [illegible] बनाने के लिए [illegible] [illegible] है, [illegible] के अध्यापकों को हिंदी के शब्दसमूह के विकास की [illegible] प्रवृत्तियों से परिचित होकर उनको विद्यार्थियों की चेतना तक पहुँचाने के [illegible] होना चाहिए।

यह [illegible] [illegible] और आवश्यक है कि हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। हिंदी [illegible] प्राचीन, [illegible] और श्रेष्ठ भाषा है। हमारी आकांक्षा यह है कि हिंदी [illegible] संयुक्त राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषा के रूप में शामिल हो और इस के लिए भारत सरकार की ओर से किये जा रहे अथक प्रयासों के साथ-साथ उज़्बेकिस्तान के [illegible] [illegible] में [illegible] हिंदी का प्रचार-प्रसार कर रहे सभी हिंदीप्रेमी लोग अपने [illegible] [illegible] दे रहे।